मुझे कहाँ जाना है?

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

मैं कौन हूँ? मैं कहाँ से आया हूँ? मुझे कहाँ जाना है? यह दार्शनिक विषय है। यह जिज्ञासा होने पर जीवन की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है। मुझे कहाँ जाना है यह स्वतन्त्रता का प्रतीक है। बीज बोने में हम स्वतंत्र हैं। किन्तु जैसे बीज डाल दिया हम परतंत्र हो जाते हैं। जैसा बीज बोया गया है वैसा परिणाम अवश्य मिलेगा। हमें कहाँ जाना है यह हमें निश्चित करना है। जीवन में परिवर्तन करना मनुष्य के अपने हाथ में है। भगवान बुद्ध, भगवान महावीर राजकुल में उत्पन्न हुए थे। जीवन की यथार्थता को जानने के लिए उन्होंने राज–पाट छोड़कर सन्यांस धारण कर लिया। उनका उद्देश्य केवल स्व तक ही सीमित नहीं था बल्कि सम्पूर्ण मानवता को राह दिखाने के लिए उन्होंने सत्य का मार्ग खोजा। राजसी वैभव को त्यागकर मोक्ष के मार्ग पर वे लोग चल दिये। जन्म–मृत्यु के आघात को देखकर उसके यथार्थ को जानने के लिए निकल पड़े।

जीव को कहाँ जाना है इसका निर्णय उसे स्वयं को करना पड़ता है। संतों की वाणी भगवत कृपा, सत्संगति, मानवता का कल्याण इत्यादि के माध्यम से वह अपना मार्ग प्रशस्त करता है। ज्ञान हो जाने पर चलना स्वयं को होता है। किधर जाना है, कहाँ जाना है यह स्वयं को निश्चित करना पड़ता है। जन्म जन्मान्तर के अर्जित कर्मों के आधार पर ही आगे का जीवन निश्चित होता है। यदि मनुष्य अच्छा कर्म किया है तो उसे अच्छी गति प्राप्त होती है। यदि वह बुरा कर्म करता है तो उसे बुरी गति प्राप्त होती है।

सब प्राणी, सब भूत, सब जीव और सब सत्त्व नाना प्रकार की योनियों में उत्पन्न होते हैं। ये प्राणी वहीं स्थिति और वृद्ध को प्राप्त करते हैं। वे शरीर से उत्पन्न होते हैं, शरीर में रहते हैं और शरीर में वृद्ध को प्राप्त करते हैं और शरीर का आहार ग्रहण करते हैं। वे कर्म के अनुगामी हैं। कर्म ही उनकी उत्पत्ति, स्थिति और गति आदि का कारण है। वे कर्म के प्रभाव से ही विभिन्न अवस्थाओं को प्राप्त करते हैं।

प्राणियों की उत्पत्ति स्थान चौरासी लाख है। उनकी एक करोड़ सतानवें लाख पचास हजार जातियां हैं। एक योनि में अनेक जातियां होती है। जैसे गोबर एक योनि है, उसमें कृमिकुल, कीटकुल, वृश्चिककुल आदि अनेक जातियां है। सम्पूर्ण जीव योनि षटकायिक जीवों में विभक्त है। इनमें पृथ्वीकायिक जीवों का उत्पत्ति स्थान सात लाख, अप्कायिक जीवों का उत्पत्ति स्थान सात लाख, तेजस् कायिक जीवें का उत्पत्ति स्थान सात लाख, वनस्पतिकायिक जीवों का उत्पत्ति स्थान चौवीस लाख, द्वीन्द्रिय जीवों का उत्पत्ति स्थान दो लाख, त्रीन्द्रिय जीवों का उत्पत्ति स्थान दो लाख, चतुरिन्द्रिय जीवों का उत्पत्ति स्थान दो लाख, तिर्यंच पंचेन्द्रिय जीवों का उत्पत्ति स्थान चार लाख, मनुष्य योनि चौदह लाख, नारक जीव चार लाख, देव योनि चार लाख। इस प्रकार पृथ्वीकायिक से लेकर देव योनि तक सम्पूर्ण जीवों का उत्पत्ति स्थान चौरासी लाख है।

जिस प्रकार मानव में जीवन है उसी प्रकार पौधों और पशुओं में जीवन स्वीकार किया गया है। सभी प्रकार के जीवों में पृथ्वी के कीटाणुओं में उसी प्रकार जीवन है। लेकिन लकड़ी, पत्थर आदि पौद्गलिक वस्तुओं में जीवन नहीं है। ये जड़ पदार्थ हैं। इन्हें अचेतन कहा जाता है। चेतना भौतिक तत्वों का गुण नहीं है। भौतिक तत्वों में चेतना के संयोग से चेतना उत्पन्न होती हैं। वनस्पतियों और पशुओं में वातावरण के अनुकूल अपने को बनाने की एक प्रमुख विशेषता पाई जाती हैं। जिसके कारण बदलते हुए वैश्विक परिदृश्य में उनका अस्तित्व सुरक्षित रहता है। कुछ विशिष्ट प्रजातियां वातावरण के अनुकूल अपनी संरचना विशिष्ट प्रकार से करती हैं।

लैंगिक उत्पाद स्त्री और पुरुष के संसर्ग से होता है। पर्यावरण से जीवन प्रदान करने वाले पुद्गलों को एकत्रित कर जब आत्मा स्वतः जन्म धारण कर लेती है तो उसे सम्मूर्छन जन्म कहा जाता है। एकेन्द्रिय से लेकर असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचों तथा असंज्ञी पंचेन्द्रिय मनुष्य सम्मूर्छन जन्म लेते हैं। कुछ संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच भी सम्मूर्छन विधि से जन्म लेते हैं। सम्मूर्छन जन्म नर मादा के बिना संयोग से धारण हो जाता है। उपपाद जन्म केवल दैवी और नारकीय जीवों का होता है। अनुकूल परिस्थितियों के अभाव में सम्मूर्छन प्रक्रिया के माध्यम से जीवन सम्भव नहीं हो सकता। प्रत्येक वस्तु की उत्पत्ति हो सकती हैं किन्तु आत्मा की उत्पत्ति नहीं होती। आत्मा अजर–अमर, अविनाशी और स्थायी तत्व है। जीवों का आवागमन बना रहता है।

पर्याप्ति और प्राण जीव जन्तुओं और पशुओं के वास्तविक जीवित तत्व हैं। पर्याप्ति और प्राण दो ऐसी शक्तियां हैं, जो जीवन के नियामक हैं। प्राणी का जीवन प्राणशक्ति पर आधारित है। प्राणशक्तियां दस हैं– स्पर्शन इन्द्रिय प्राण, रसन इन्द्रिय प्राण, घ्राण इन्द्रिय प्राण, चक्षु इन्द्रिय प्राण, श्रोत्र इन्द्रिय प्राण, मन बल, वचन बल, काय बल, श्वासोच्छ्वास प्राण, आयुष्य प्राण। ये दसों प्राण छः पर्याप्तियों में समाहित हैं– इन्द्रिय पर्याप्ति, श्वासोच्छ्वास प्रर्याप्ति, शरीर पर्याप्ति, भाषा पर्याप्ति, मनः पर्याप्ति, आहार पर्याप्ति। शरीर का अस्तित्व और विकास आंशिक रूप से डीएनए पर निर्भर करता है। शरीर केवल औदारिक, वैक्रिय और आहारक ही नहीं होता, बल्कि तैजस और कार्मण भी होता है।